॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

सुबोधालङ्कारो

१. दोसावबोध-पठमपरिच्छेद

रतनत्तयप्पणाम

१. मुनिन्दवदनम्भोज, गब्भसम्भवसुन्दरी।
सरणं पाणिनं वाणी, मय्हं पीणयतं मनं॥

निमित्त

२. **राम, सम्मा**’द्य’लङ्कारा, सन्ति सन्तो पुरातना।
तथापि तु वळञ्जेन्ति, सुद्धमागधिका न ते॥

अभिधानादिकं

३. तेना’पि नाम तोसेय्य, मेते लङ्कारवज्जिते।
अनुरूपेना’लङ्कारे, ने’स मेसो परिस्समो॥

४. येसं न सञ्चिता पञ्ञा, नेकसत्थन्तरो’चिता।
सम्मोह’ब्भाहता वे’ते, नावबुज्झन्ति किञ्चिपि॥

५. किं तेहि पादसुस्सूसा, येसं नत्थि गरूनि’ह।
ये तप्पादरजोकिण्णा, ते’व साधू विवेकिनो॥

६. **कब्ब, नाटक**निक्खित्त, नेत्तचित्ता कविज्जना।
यंकिञ्चि रचयन्ते’तं, न विम्हयकरं परं॥

७. तेये’व पटिभावेन्तो, सो’व बन्धो सविम्हयो।
येन तोसेन्ति विञ्ञू ये, तत्थ प्य’विहिता’दरा॥

८. **बन्धो** च नाम सद्द,त्था, सहिता दोसवज्जिता।
पज्ज गज्ज विमिस्सानं, भेदेना’यं तिधा भवे॥

९. **निबन्धो** चा’**निबन्धो** च, पुन द्विधा निरुप्पते।
तं तु पापेन्त्य’लङ्कारा, विन्दनीयतरत्तनं॥

१०. अनवज्जं मुखम्भोज ["अम्भोज"न्ति पदं पाळियं नत्थि, वारिजवाचकं, सक्कटगन्थतो अनीतं], मनवज्जा च भारती।
अलङ्कता'व सोभन्ते, किं नु ते निर'लङ्कता?

११. विना गरूपदेसं तं, बालो'लङ्कत्तु मिच्छति।
सम्पापुणे न विञ्ञूहि, हस्सभावं कथं नु सो?

१२. गन्थोपि कविवाचान, मलङ्कार'प्पकासको।
याति तब्बचनीयत्तं, त'ब्बोहारू'पचारतो॥

१३. द्विप्पकारा अलङ्कारा, तत्थ **सद्द, त्थ**भेदतो।
सद्दत्था **बन्धन**नामा'व, तंसज्जित तदावलि॥

१४. गुणालङ्कारसंयुत्ता, अपि दोसलव'ङ्किता।
पसंसिया न विञ्ञूहि, सा कञ्ञा विय तादिसी॥

१५. तेन दोसनिरासो'व, महुस्साहेन साधियो।
निद्दोसा सब्बथा सा'यं, सगुणा न भवेय्य किं?

१६. सा'लङ्कारवियुत्ता'पि, गुणयुत्ता मनोहरा।
निद्दोसा दोसरहिता, गुणयुत्ता वधू विय॥

१७. **पदे वाक्ये तदत्थे** च, दोसा ये विविधा मता।
सो'दाहरण मेतेसं, लक्खणं कथयाम्य'हं॥

पददोस उद्देस

१८. विरुद्धत्थन्तरा, झत्थ, किलिट्ठानि, विरोधि च।
नेय्यं, विसेसनापेक्खं, हीनत्थक मनत्थकं॥

वाक्यदोस उद्देस

१९. दोसा पदान वाक्यान, मेकत्थं भग्गरीतिकं।
तथा ब्याकिण्ण गाम्मानि, यतिहीनं कमच्चुतं।
अतिवुत्त मपेतत्थं, सबन्धफरुसं तथा॥

वाक्यत्थदोसउद्देस

२०. अपक्कमो', चित्यहीनं, भग्गरीति, ससंसयं।
गाम्मं दुट्ठालङ्कतीति, दोसा वाक्यत्थनिस्सिता॥

पददोसनिद्देस

२१. **विरुद्धत्थन्तरं** तञ्हि, यस्स'ञ्ञत्थो विरुज्झति।
अधिप्पेते यथा मेघो, **विसदो** सुखये जनं॥

२२. विसेस्य मधिकं येना, **ञत्थ** मेतं भवे यथा।
ओभासिता'सेसदिसो, खज्जोतो'यं विराजते॥

२३. यस्स'त्था'वगमो दुक्खो, पकत्या'दिविभागतो।
किलिट्ठं तं यथा ताय, सो'य मालिङ्ग्यते **पिया॥**

२४. यं किलिट्ठपदं मन्दा, भिधेय्यं **यमका**दिकं।
किलिट्ठपददोसे'व, तम्पि अन्तो करीयति॥

२५. पतीतसद्दरचितं, सिलिट्ठपदसन्धिकं।
पसादगुणसंयुत्तं, **यमकं** मत मेदिसं॥

२६. **अब्यपेतं ब्यपेत'ञ्ञ,** मावुत्ता'नेकवण्णजं।
यमकं तञ्च पादान, मादि, मज्झ, न्त, गोचरं॥

अब्यपेत पठमपादादि यमकं

२७. सुजना'सुजना सब्बे, गुणेनापि विवेकिनो।
विवेकं न समायन्ति, अविवेकिजनन्तिके॥

अब्यपेत पठम दुतिय पादादि यमकं

२८. कुसला'कुसला सब्बे, पबला'पबला थवा।
नो याता याव'होसित्तं, सुखदुक्खप्पदा सियुं।
अब्यपेत पठम दुतिय ततियपादादि यमकं॥

२९. सादरं सा दरं हन्तु, विहिता विहिता मया।
वन्दना वन्दनामान, भाजने रतनत्तये॥

अब्यपेत चतुक्कपादादि यमकं

३०. कमलं क'मलं कत्तुं, वनदो वनदो'म्बरं।
सुगतो सुगतो लोकं, सहितं स हितं करं॥

३१. अब्यपेतादियमक, स्सेसो लेसो निदस्सितो।
ञेय्यानि'मायेव दिसा, य'ञ्ञानि यमकानिपि॥

३२. अच्चन्तबहवो तेसं, भेदा सम्भेदयोनियो।
तथापि केचि सुकरा, केचि अच्चन्तदुक्करा॥

३३. **यमकं** तं **पहेली** [पहेळि (क०)] च, नेकन्तमधुरानि'ति।
उपेक्खियन्ति सब्बानि, सिस्सखेदभया मया॥

३४. देसकालकलालोक, ञायागमविरोधि यं।
तं **विरोधिपदं** चे'त, मुदाहरणतो फुटं॥

३५. य दप्पतीत मानीय, वत्तब्बं **नेय्य** माहु तं।
यथा सब्बापि **धवला,** दिसा रोचन्ति रत्तियं॥

३६. नेदिसं बहु मञ्ञन्ति, सब्बे सब्बत्थ विञ्ञुनो।
दुल्लभा'वगती सद्द, सामत्थियविलङ्घिनी॥

३७. सिया **विसेसनापेक्खं,** यं तं पत्वा विसेसनं।
सात्थकं तं यथा तं सो, भिय्यो पस्सति **चक्खुना॥**

३८. हीनं करे विसेस्यं यं, तं **हीनत्थं** भवे यथा।
निप्पभी कत खज्जोतो, समुदेति दिवाकरो॥

३९. पादपूरणमत्तं यं, **अनत्थ**मिति तं मतं।
यथा **हि** वन्दे बुद्धस्स, पादपङ्केरुहं **पि च॥**

वाक्यदोस निद्देस

४०. सद्दतो अत्थतो वुत्तं, यत्थ भिय्योपि वुच्चति।
त **मेकत्थं** यथा'**भाति, वारिदो वारिदो अयं॥**

यथा च

४१. तित्थियङ्कुरबीजानि, जहं दिट्ठिगतानि'ह।

पसादेति पसन्ने'सो, महामुनि महाजने॥

४२. आरद्धक्कमविच्छेदा, **भग्गरीति** भवे यथा।
कापि पञ्ञा, कोपि पगुणो, पकतीपि अहो तव॥

४३. पदानं दुब्बिनिक्खेपा, ब्यामोहो यत्थ जायति।
तं **ब्याकिण्ण**न्ति विञ्ञेय्यं, तदुदाहरणं यथा॥

४४. **बहुगुणे पणमति, दुज्जनानं प्ययं जनो।
हितं पमुदितो निच्चं, सुगतं समनुस्सरं॥**

४५. विसिट्ठवचना'पेतं, **गाम्मं'**त्य'भिमतं यथा।
कञ्ञे कामयमानं मं, न कामयसि किंन्वि'दं?

४६. पदसन्धानतो किञ्चि, दुप्पतीतिकरं भवे।
तम्पि **गाम्मं** त्य'भिमतं, यथा **याभवतो पिया॥**

४७. वुत्तेसु सूचिते ठ्ठाने, पदच्छेदो भवे यति।
यं ताय हीनं तं वुत्तं, **यतिहीन**न्ति सा पन॥

४८. यति **सब्बत्थपादन्ते, वुत्तड्ढे** च विसेसतो।
पुब्बापरानेकवण्ण, **पदमज्झे**पि कत्थचि॥

तत्थोदाहरणपच्चुदाहरणानि यथा

४९. तं नमे सिरसा **चामि, करवण्णं** तथागतं।
सकलापि दिसा **सिञ्च, तिव** सोण्णरसेहि यो॥

५०. सरो सन्धिम्हि पुब्बन्तो, विय लोपे विभत्तिया।
अञ्ञथा त्व'ञ्ञथा तत्थ, या'देसादि परा'दि'व॥

५१. **चा**दी पुब्बपदन्ता'व, निच्चं पुब्बपदस्सिता।
पादयो निच्चसम्बन्धा, परादीव परेन तु॥

सब्बत्थोदाहरणानि यथा

५२. नमे तं सिरसा **सब्बो, पमा'तीतं** तथागतं।
यस्स लोकग्गतं **पत्त, स्सो'पमा** न हि युज्जति॥

५३. मुनिन्दं तं सदा **वन्दा, म्य’नन्तमति** मुत्तमं।
यस्स **पञ्ञा च मेत्ता च, निस्सीमा**ति विजम्भति॥

चादिपादीसु पच्चुदाहरणानि यथा

५४. महामेत्ता **महापञ्ञा, च** यत्थ परमोदया।
पणमामि जिनं तं **प, वरं** वरगुणा’लयं॥

५५. पदत्थक्कमतो मुत्तं, **कमच्चुत** मिदं यथा।
खेत्तं वा देहि गामं वा, देसं वा मम सोभनं॥

५६. लोकियत्थ मतिक्कन्तं, **अतिवुत्तं** मतं यथा।
अतिसम्बाध माकास, मेतिस्सा थनजम्भने॥

५७. समुदायत्थतो’पेतं, तं **अपेतत्थकं** यथा।
गाविपुत्तो बलिबद्धो, तिणं खादी पिवी जलं॥

५८. बन्धे फरुसता यत्थ, तं **बन्धफरुसं** यथा।
खरा खिला परिक्खीणा, खेत्ते खित्तं फलत्य’लं॥

वाक्यत्थदोस निद्देस

५९. ञेय्यं लक्खण मन्वत्थ, वसेना’**पक्कमादिनं।**
उदाहरण मेतेसं, दानि सन्दस्सयाम्य’हं॥

तत्था’पक्कमं यथा

६०. **भावना, दान, सीलानि,** सम्मा सम्पादितानि’ह।
भोग, सग्गादि, निब्बान, साधनानि न संसयो॥

ओचित्यहीनं यथा

६१. **पूजनीयतरो लोके, अह मेको निरन्तरं।
मयेकस्मिं गुणा सब्बे, यतो समुदिता अहं॥**

यथा च

६२. **याचितो’हं कथं नाम, न दज्जाम्य’पि जीवितं।
तथापि पुत्तदानेन, वेधते हदयं मम॥**

भग्गरीति यथा

६३. **इत्थीनं दुज्जनानञ्च**, विस्सासो नोपपज्जते।
विसे सिङ्गिम्हि नदियं, रोगे राजकुलम्हि च॥

ससंसयं यथा

६४. मुनिन्दचन्दिमा लोक, सरलोलविलोचनो।
जनो' वक्कन्तपन्थो'व, **गो**पदस्सनपीणितो॥

६५. वाक्यत्थतो दुप्पतीति, करं **गाम्मं** मतं यथा।
पोसो **वीरियवा** सो'यं, **परं हन्त्वा** न विस्समी॥

६६. **दुट्ठालङ्करणं** तेतं [त्वेथं (?)], यत्था'लङ्कारदूसनं।
तस्सा'लङ्कारनिद्देसे, रूप मावि भविस्सति॥

६७. कतो'त्र सङ्खेपनया मया'यं,
दोसान मेसं पवरो विभागो।
एसो'व'लं बोधयितुं कवीनं,
तमत्थि चे खेदकरं परम्पि॥

इति सङ्घरक्खितमहासामिविरचिते सुबोधालङ्कारे

दोसावबोधो नाम

पठमो परिच्छेदो।

२. दोसपरिहारावबोध-दुतियपरिच्छेद

६८. कदाचि कविकोसल्ला, विरोधो सकलो प्य'यं।
दोससङ्ख्य मतिक्कम्म, गुणवीथिं विगाहते॥

६९. तेन वुत्तविरोधान, मविरोधो यथा सिया।
तथा दोसपरिहारा, वबोधो दानि नीयते॥

तत्थ विरुद्धत्थन्तरस्स परिहारो यथा

७०. विन्दन्तं पाकसालीनं, सालीनं दस्सना सुखं।

तं कथं नाम मेघो'यं, **विसदो** सुखये जनं?

यथा वा

७१. **विनायको**पि नागो सि, **गोतमो**पि महामति।
पणीतोपि रसा'पेतो, चित्ता मे सामि ते गति॥

अझ'त्थस्स यथा

७२. कथं तादिगुणाभावे, लोकं तोसेति दुज्जनो?
ओभासितासेसदिसो, खज्जोतो नाम किं भवे?

७३. पहेलिकाय [पहेळिकाय (क॰)] मारुळ्हा, न हि दुट्ठा किलिट्ठता।
पिया सुखा'लिङ्गितं क, मालिङ्गति नु नो इति॥

७४. यमके नो पयोजेय्य, किलिट्ठपद मिच्छिते।
ततो यमक मञ्ञं तु, सब्ब मेतंमयं विय॥

देसविरोधिनो यथा

७५. बोधिसत्तप्पभावेन, **थलेपि जलजान्य'हुं।**
नुदन्तानि'व सुचिरा, वासक्लेसं तहिं जले॥

कालविरोधिनो यथा

७६. महानुभाव पिसुनो, मुनिनो मन्द मारुतो।
सब्बोतुकमयं वायि, धुनन्तो **कुसुमं** समं॥

कलाविरोधिनो यथा

७७. निमुग्गमानसो बुद्ध, गुणे पञ्चसिखस्सपि।
तन्तिस्सर विरोधो सो, न सम्पीणेति कं जनं?

लोकविरोधिनो यथा

७८. गणये चक्कवाळं सो, चन्दनायपि सीतलं।
सम्बोधि सत्त हदयो, **पदित्त'ङ्गारपूरितं॥**

ञायविरोधिनो यथा

७९. **परिच्चत्तभवो**पि त्व, मुपनीतभवो असि।
अचिन्त्यगुणसाराय, नमो ते मुनिपुङ्गव॥

आगमविरोधिनो यथा

८०. नेवा’लपति केना’पि, **वचीविञ्ञत्तितो** यति।
सम्पजानमुसावादा, फुसेय्या’पत्तिदुक्कटं॥

नेय्यस्स यथा

८१. मरीचिचन्दना’लेप, लाभा सीतमरीचिनो।
इमा सब्बापि **धवला,** दिसा रोचन्ति निब्भरं॥

यथा वा

८२. मनोनुरञ्जनो मार, ङ्गनासिङ्गारविब्भमो।
जिनेना’समनुञ्ञातो, मारस्स **हदया’नलो॥**

विसेसनापेक्खस्स यथा

८३. अपयाता’पराधम्पि, अयं वेरी जनं जनो।
कोधपाटलभूतेन, भिय्यो पस्सति **चक्खुना॥**

हीनत्थस्स यथा

८४. **अप्पकानम्पि** पापानं, पभावं नासये बुधो।
अपि **निप्पभाता’नीत, खज्जोतो** होति भाणुमा॥

अनत्थस्स यथा

८५. न पादपूरणत्थाय, पदं योजेय्य कत्थचि,
यथा वन्दे मुनिन्दस्स, पादपङ्केरुहं **वरं॥**

८६. भयकोधपसंसादि, विसेसो तादिसो यदि।
वत्तुं कामीयते दोसो, न तत्थे’कत्थताकतो॥

यथा

८७. **सप्पो सप्पो**! अयं हन्द, निवत्ततु भवं ततो,

यदि जीवितुकामो'सि, कथं त मुपसप्पसि?

भग्गरीतिनो यथा

८८. योकोचि रूपा'तिसयो, कन्ति **कापि** मनोहरा।
विलासा'तिसयो **कोपि,**
अहो! बुद्धमहो'दयो॥

८९. अब्यामोहकरं बन्धं, अब्याकिण्णं मनोहरं।
अदूरपद विन्यासं, पसंसन्ति कविस्सरा॥

यथा

९०. **नीलुप्पला'भं नयनं, बन्धुकरुचिरो'धरो।**
नासा हेम'ङ्कुसो तेन, जिनो'यं पियदस्सनो॥

९१. समतिक्कन्त गाम्मत्तं, कन्त वाचा'भिसङ्खतं।
बन्धनं रसहेतुत्ता, **गाम्मत्तं** अतिवत्तति॥

यथा

९२. **दुनोति कामचण्डालो,** सो मं सदय निद्दयो।
ईदिसं ब्यसना'पन्नं, सुखीपि कि मुपेक्खसे?

९३. **यतिहीनपरिहारो,** न पुने'दानि नीयते।
यतो न सवनु'ब्बेगं, हेट्ठा येसं विचारितं॥

कमच्चुतस्स यथा

९४. उदारचरितो'सि त्वं, तेने'वा'राधना त्वयि।
देसं वा देहि **गामं** वा, **खेत्तं** वा मम सोभनं॥

अतिवुत्तस्स यथा

९५. मुनिन्दचन्दसम्भूत, यसोरासिमरीचिनं।
सकलोप्य'य माकासो, ना'वकासो विजम्भने॥

९६. वाक्यं ब्यापन्नचित्तानं, **अपेतत्थं** अनिन्दितं।
तेनु'म्मत्तादिकानं तं, वचना'ञ्ञत्र दुस्सति॥

यथा

९७. समुद्दो पीयते सो'य, मह'मज्ज जरातुरो।
इमे गज्जन्ति जीमूता, सक्कस्से'रावणो पियो॥

९८. सुखुमाला'विरोधित्त, दित्तभावप्पभावितं।
बन्धनं **बन्धफरुस, दोसं** संदूसयेय्य तं॥

यथा

९९. पस्सन्ता रूपविभवं, सुणन्ता मधुरं गिरं।
चरन्ति साधू सम्बुद्ध, काले केळिपरम्मुखा॥

अपक्कमस्स यथा

१००.**भावना, दान, सीलानि,** सम्मा सम्पादितानि'ह।
निब्बान, भोग, सग्गादि, साधनानि न संसयो॥

१०१.उद्दिट्ठविसयो कोचि, विसेसो तादिसो यदि।
अनु'द्दिट्ठेसु नेव'त्थि, दोसो कमविलङ्घने॥

यथा

१०२.कुसला'कुसलं अब्या, कत'मिच्चेसु पच्छिमं।
अब्याकतं पाकदं न, पाकदं पठमद्वयं॥

१०३.सगुणाना'विकरणे, कारणे सति तादिसे।
ओचित्यहीनता'पत्ति, नत्थि भूतत्थसंसिनो॥

१०४.ओचित्यं नाम विञ्ञेय्यं, लोके विख्यात मादरा।
तत्थो'पदेसपभवा, सुजना कविपुङ्गवा॥

१०५.विञ्ञातोचित्यविभवो, चित्यहीनं परिहरे।
ततो'चित्यस्स सम्पोसे,
रसपोसो सिया कते॥

यथा

१०६.यो मारसेन मासन्न, मासन्नविजयु'स्सवो।

तिणायपि न मञ्ञित्थ, सो वो देतु जयं जिनो॥

१०७.आरद्धकत्तुकम्मादि, कमा'तिक्कमलङ्घने।
भग्गरीतिविरोधो'यं, गतिं न क्वा'पि विन्दति॥

यथा

१०८.**सुजन'ञ्ञान मित्थीनं,** विस्सासो नो'पपज्जते।
विसस्स सिङ्गिनो रोग, नदीराजकुलस्स च॥

यथा

१०९.**भेसज्जे विहिते सुद्ध, बुद्धादिरतनत्तये।**
पसाद माचरे निच्चं, **सज्जने सगुणे**पि च॥

ससंसयस्स यथा

११०.मुनिन्दचन्दिमा'लोक, रस लोल विलोचनो।
जनो'वक्कन्तपन्थो'व, **रंसि**दस्सनपीणितो॥

१११. संसयाये'व यंकिञ्चि, यदि कीळादिहेतुना।
पयुज्जते न दोसो'व, ससंसयसमप्पितो॥

यथा

११२.**याते दुतियं निलयं, गरुम्हि सकगेहतो।**
पापुणेय्याम नियतं, सुख'मज्झयना'दिना॥

११३.**सुभगा** भगिनी सा'यं, एतस्सि'च्चेवमादिकं।
न 'गाम्म'मिति निद्दिट्ठं, कवीहि सकलेहिपि॥

११४.दुट्ठा'लङ्कारविगमे, सोभना'लङ्कतिक्कमो।
अलङ्कारपरिच्छेदे, आविभावं गमिस्सति॥

११५.दोसे परीहरितु मेस वरो'पदेसो,
सत्थन्तरानुसरणेन कतो मयेवं।
विञ्ञायि'मं गरुवरान'धिक'प्पसादा,
दोसे परं परिहरेय्य यसोभिलासी॥

इति सङ्घरक्खितमहासामिविरचिते सुबोधालङ्कारे

दोसपरिहारावबोधो नाम

दुतियो परिच्छेदो।

३. गुणावबोध-ततियपरिच्छेद

अनुसन्धि

११६.सम्भवन्ति गुणा यस्मा, दोसाने'व'मतिक्कमे।
दस्सेस्सं ते ततो दानि, सद्दे सम्भूसयन्ति ये॥

सद्दालङ्कार उद्देस

११७.पसादो'जो, मधुरता, समता, सुखुमालता।
सिलेसो'दरता, कन्ति, अत्थब्यत्ति, समाधयो॥

सद्दालङ्कार पयोजन

११८.गुणेहे'तेहि सम्पन्नो, बन्धो कविमनोहरो।
सम्पादियति कत्तूनं, कित्ति मच्चन्तनिम्मलं॥

सद्दालङ्कार निद्देस

११९. अदूराहितसम्बन्ध, सुभगा या पदा'वलि।
सुपसिद्धा'भिधेय्या'यं, **पसादं** जनये यथा॥

१२०.अलङ्करोन्ता **वदनं, मुनिनो'धररंसियो।**
सोभन्ते'रुणरंसी'व, सम्पतन्ता'म्बुजो'दरे॥

१२१. **ओजो** समासबाहुल्य, मेसो गज्जस्स जीवितं।
पज्जेप्य'ना'कुलो सो'यं,
कन्तो कामीयते यथा॥

१२२.**मुनिन्द मन्द सञ्जात, हास चन्दन लिम्पिता।**
पल्लवा धवला तस्से, वेको ना'धरपल्लवो॥

१२३.पदा'भिधेय्यविसयं, समास ब्यास सम्भवं।

यं पारिणत्यं होती'ह, सोपि **ओजो**'व तं यथा॥

१२४.जोतयित्वान सद्धम्मं, सन्तारेत्वा सदेवके।
जलित्वा अग्गिखन्धो'व, निब्बुतो सो ससावको॥

१२५.मत्थकट्ठी मतस्सा'पि, रजोभावं वजन्तु मे।
यतो पुञ्ञेन ते सेन्तु, जिन पाद'म्बुजद्वये॥

१२६.इच्चत्र निच्चप्पणति, गेधो साधु पदिस्सति।
जायते'यं गुणो तिक्ख, पञ्ञानमभियोगतो॥

१२७.मधुरत्तं पदासत्ति, र'नुप्पासवसा द्विधा।
सिया समसुति पुब्बा, वण्णा'वुत्ति परो यथा॥

१२८.यदा एसो'भिसम्बोधिं, सम्पत्तो मुनिपुङ्गवो।
तदा पभुति धम्मस्स, लोके जातो महु'स्सवो॥

१२९.मुनि**न्दम**न्**द**हासा ते, कु**न्द** स**न्दो**हविब्भमा।
दिस**न्त** मनुधाव**न्ति, ह**स**न्ता** च**न्द**क**न्ति**यो॥

१३०.सब्बकोमलवण्णेहि, ना'**नुप्पासो** पसंसियो।
यथा'**यं मालतीमाला, लिन लोला'लिमालिनी॥**

१३१.मुदूहि वा केवलेहि, केवलेहि फुटेहि वा,
मिस्सेहि वा **तिधा** होति, वण्णेहि **समता** यथा॥

केवलमुदुसमता

१३२.कोकिला'लापसंवादी, मुनिन्दा'लापविब्भमो।
हदयङ्गमतं याति, सतं देति च निब्बुतिं॥

केवलफुटसमता

१३३.सम्भावनीयसम्भावं, भगवन्तं भवन्तगुं।
भवन्तसाधना'कङ्खी, को न सम्भावये विभुं॥

मिस्सकसमता

१३४.लद्धचन्दनसंसग्ग, सुगन्धि मलया'निलो।
मन्द मायाति भीतो'व, मुनिन्दमुखमारुता॥

१३५.अनिट्ठुर'क्खर'प्पाया, सब्बकोमल निस्सटा।
किच्छमुच्चारणा'पेत, ब्यञ्जना **सुखुमालता**॥

१३६.पस्सन्ता रूपविभवं, सुणन्ता मधुरं गिरं।
चरन्ति साधू [साधु (सी-छन्धानुरक्खणत्थं)] **सम्बुद्ध, काले केळिपरम्मुखा॥**

१३७.अलङ्कारविहीना'पि, सतं सम्मुखते'दिसी।
आरोहति विसेसेन, रमणीया त'दुज्जला॥

१३८.रोमञ्च पिञ्छ रचना, साधु वादाहितद्धनी।
लळन्ति'मे मुनिमेघु, म्मदा साधु सिखावला॥

१३९.सुखुमालत्त मत्थे'व, पदत्थविसयम्पि च।
यथा मतादिसद्देसु, **कित्तिसेसा**दिकित्तनं॥

१४०सिलिट्ठ पद संसग्ग, रमणीय गुणा'लयो।
सबन्धगारवो सो'यं, **सिलेसो** नाम तं यथा॥

१४१.बालि'न्दुविब्भम'च्छेदि, नखरा'वलि कन्तिभि।
सा मुनिन्दपद'म्भोज, कन्ति वो वलिता'वतं॥

१४२उक्कंसवन्तो योकोचि, गुणो यदि पतीयते।
उदारो'यं भवे तेन, सनाथा बन्धपद्धति॥

१४३पादम्भोज रजो लित्त, गत्ता ये तव गोतम।
अहो! ते जन्तवो यन्ति, सब्बथा निरजत्तनं॥

१४४एवं जिना'नुभावस्स, समुक्कंसो'त्र दिस्सति।
पञ्ञवा विधिना'नेन, चिन्तये पर मीदिसं॥

१४५उदारो सोपि विञ्ञेय्यो, यं पसत्थ विसेसनं।
यथा **कीळासरो लीला, हासो हेमङ्गदा**'दयो॥

१४६लोकिय'त्था'न'तिक्कन्ता, कन्ता सब्बजनानपि।
कन्ति नामा'तिवुत्तस्स, वुत्ता सा परिहारतो॥

यथा **मुनिन्द** इच्चादि।

१४७.

अत्थब्यत्ता’भिधेय्यस्सा,
नेय्यता सद्दतो’त्थतो।
सा’यं तदुभया नेय्य, परिहारे पदस्सिता।
यथा **मरीचिच्चादि** च, **मनोनुरञ्जनो**च्चादि॥

पुन अत्थेन यथा

१४८.सभावा’मलता धीर, मुधा पादनखेसु ते।
यतो ते’वनता’नन्त, मोळिच्छाया जहन्ति नो॥

१४९.’बन्धसारो’ति मञ्ञन्ति, यं समग्गापि विञ्ञुनो।
दस्सना’वसरं पत्तो, **समाधि** नाम’यं गुणो॥

१५०.अञ्ञधम्मो ततो’ञ्ञत्थ, लोकसीमा’नुरोधतो।
सम्मा आधीयते’च्चे’सो, **‘समाधी’**ति निरुच्चति॥

समाधि उद्देस

१५१.अपाणे पाणीनं धम्मो, सम्मा आधीयते क्वचि,।
निरूपे रूपयुत्तस्स, निरसे सरसस्स, च॥

१५२.अद्रवे द्रवयुत्तस्स, अकत्तरिपि कत्तुता,।
कठिनस्सा’सरीरे,पि, रूपं तेसं कमा सिया॥

समाधिनिद्देस

अपाणे पाणीनं धम्मो

१५३.उण्णा पुण्णि’न्दुना नाथ! दिवापि सह **सङ्गमा।**
विनिद्दा सम्पमोदन्ति, मञ्ञे कुमुदिनी तव॥

निरुपे रूपयुत्तस्स

१५४**दयारसेसु** मुज्जन्ता, जना’**मतरसेस्वि**’व।
सुखिता हतदोसा ते, नाथ! पाद’म्बुजा’नता॥

निरसे सरसस्स

१५५**मधुरे**पि **गुणे** धीर, न’प्पसीदन्ति ये तव।

कीदिसी मनसोवुत्ति, तेसं **खारगुणान** भो॥

अद्रवे द्रवयुत्तस्स

१५६.सब्बत्थसिद्ध! **चूळक, पुटपेय्या महागुणा।**
दिसा समन्ता धावन्ति, कुन्दसोभा स लक्खणा॥

अकत्तरिपि कत्तुता

१५७**मारा'रिबल**विस्सट्ठा, कुण्ठा **नानाविधा'युधा।**
लज्जमाना'ञ्ञवेसेन, जिन! **पादा'नता** तव॥

कठिनस्सा सरीरे

१५८.मुनिन्दभाणुमा कालो,
दितो **बोधो'दया'चले।**
सद्धम्मरंसिना भाति, भिन्द मन्दतमं परं॥

१५९.**वमनु'ग्गिरनाद्ये**'तं, गुणवुत्य'परिच्चुतं।
अतिसुन्दर मञ्ञं तु, कामं विन्दति **गाम्मतं॥**

१६०.कन्तीनं **वमनब्याजा,** मुनिपादनखा'वली।
चन्दकन्ती पिवन्ती'व, निप्पभं तं करोन्तियो॥

१६१. अचित्तकत्तुकं रुच्य [रुच्च (सी॰)], मिच्चेवं गुणकम्मतं।
सचित्तकत्तुकं पे'तं, गुणकम्मं यदु'त्तमं॥

१६२.**उग्गिरन्तो**'व **सस्नेह, रसं** जिनवरो जने।
भासन्तो मधुरं धम्मं, कं न सप्पीणये जनं॥

१६३.यो सद्दसत्थकुसलो कुसलो निघण्डु,
छन्दोअलङ्कतिसु निच्चकता'भियोगो।
सो'यं कवित्तविकलोपि कवीसु सङ्ख्य,
मोग्गय्ह विन्दति हि कित्ति' ममन्दरूपं॥

इति सङ्घरक्खितमहासामिविरचिते सुबोधालङ्कारे

गुणावबोधो नाम

ततियो परिच्छेदो।

४. अत्थालङ्कारावबोध-चतुत्थपरिच्छेद

१६४.अत्थालङ्कारसहिता, सगुणा बन्धपद्धति।
अच्चन्तकन्ता कन्ता [यतो अच्चन्तकन्ता (क०)] व वुच्चन्ते ते ततो'धुना॥

१६५.**सभाव, वङ्कवुत्तीनं,** भेदा **द्विधा** अलंक्रिया।
पठमा तत्थ वत्थूनं, नानावत्था'विभाविनी॥

यथा

१६६.लीला विकन्ति सुभगो, दिसा थिर विलोकनो।
बोधिसत्तङ्कुरो भासं, विरोचि वाच मासभिं॥

१६७.वुत्ति वत्थुसभावस्स, या'ञ्ञथा सा'**परा** भवे।
तस्सा'नन्तविकप्पत्ता, होति बीजो'पदस्सनं॥

वङ्कवुत्ति अत्थालङ्कार

उद्देस

१६८.तत्था'तिसय, उपमा, रूपका, वुत्ति, दीपकं,।
अक्खेपो, त्थन्तरन्यासो, ब्यतिरेको, विभावना॥

१६९.हेतु, क्कमो, पियतरं, समास, परिकप्पना।
समाहितं, परियाय, वुत्ति, ब्याजोपवण्णनं॥

१७०.विसेस, रुळ्हाहङ्कारा, सिलेसो, तुल्ययोगिता।
निदस्सनं, महन्तत्तं, वञ्चना, प्पकतत्थुति,॥

१७१.एकावलि, अञ्ञमञ्ञं, सहवुत्ति, विरोधिता।
परिवुत्ति, ब्भमो, भावो, मिस्स, मासी, रसी, इति॥

१७२.एते भेदा समुद्दिट्ठा, **भावो जीवित** मुच्चते।
वङ्कवुत्तीसु पोसेसि, **सिलेसो** तु **सिरिं** परं॥

निद्देस

१७३.पकासका विसेसस्स, सिया'**तिसयवुत्ति** या।
लोका'तिक्कन्तविसया, लोकिया,ति च सा **द्विधा॥**

१७४**लोकियातिसयस्से**'ते,
भेदा ये जातिआदयो।
पटिपादीयते त्व'ज्ज, **लोकातिक्कन्तगोचरा॥**

१७५**पिवन्ति देहकन्ती ये, नेत्तञ्जलिपुटेन ते।**
ना'लं हन्तुं जिने'सं त्वं, तण्हं तण्हाहरोपि किं?

१७६.उपमानो'पमेय्यानं, सधम्मत्तं सियो'**पमा।**
सद्द, त्थगम्मा, वाक्यत्थ, विसया,ति च सा **भिधा॥**

१७७समास, पच्चये, वा'दी, **सद्दा** तेसं वसा **तिधा।**
सद्दगम्मा समासेन, **मुनिन्दो चन्दिमा'ननो॥**

१७८.आयादी **पच्चया** तेहि, **वदनं पङ्कजायते।**
मुनिन्दनयन द्वन्दं, नीलुप्पलदलीयति॥

१७९.**इवादी** इव, वा, तुल्य, समान, निभ, सन्निभा।
यथा, सङ्कास, तुलित, प्पकास, पतिरूपका॥

१८०.सरी, सरिक्ख, संवादी, विरोधि, सदिसा, विय।
पटिपक्ख, पच्चनीका, सपक्खो, पमितो, पमा॥

१८१.पटिबिम्ब, पटिच्छन्न, सरूप, सम, समिता।
सवण्णा, भा, पटिनिधि, सधम्मा, दि सलक्खणा॥

१८२.जयत्य, क्कोसति, हसति, पतिगज्जति, दूभति।
उसूयत्य, वजानाति, निन्दति, स्सति, रुन्धति॥

१८३.तस्स चोरेति सोभग्गं, तस्स कन्तिं विलुम्पति।
तेन सद्धिं विवदति, तुल्यं तेना'धिरोहति॥

१८४क्कच्छं विगाहते, तस्स, त मन्वेत्य, नुबन्धति।
तंसीलं, तंनिसेधेति, तस्स चा'नुकरोति, मे॥

१८५.उपमानो'पमेय्यानं, सधम्मत्तं विभाविभि।

इमेहि उपमाभेदा, केचि निय्यन्ति सम्पति॥

१८६.विकासिपदुमं'वा'ति, सुन्दरं सुगता'ननं।
इति **धम्मोपमा** नाम, तुल्यधम्मनिदस्सना॥

१८७.धम्महीना ''मुख'म्भोज, सदिसं मुनिनो''इति।
विपरीतो'पमा ''तुल्य, माननेन'म्बुजं तव''॥

१८८.तवा'नन'मिव'म्भोजं, अम्भोज'मिव ते मुखं।
अञ्ञमञ्ञोपमा सा'यं, अञ्ञमञ्ञोपमानतो॥

१८९.''यदि किञ्चि भवे'म्भोजं, लोचन'ब्भमुविब्भमं।
धारेतुं मुखसोभं तं, तवे''ति **अब्भुतोपमा॥**

१९०.''सुगन्धि सोभा सम्बन्धी, सिसिरं'सु विरोधि च।
मुखं तव'म्बुजंवे'ति'', सा **सिलेसोपमा** मता॥

१९१. सरूपसद्दवाच्चत्ता, सा **सन्तानोपमा** यथा।
बाला'वु'य्यानमाला'यं, सा'लका'ननसोभिनी॥

१९२.खयी चन्दो, बहुरजं, पदुमं, तेहि ते मुखं।
समानम्पि समुक्कंसि, त्य'यं **निन्दोपमा** मता॥

१९३.असमत्थो मुखेनि'न्दु, जिन! ते पटिगज्जितुं।
जळो कलङ्की'ति अयं, **पटिसेधोपमा** सिया॥

१९४.''कच्छं चन्दारविन्दानं, अतिक्कम्म मुखं तव।
अत्तना'व समं जात'', मित्य'**साधारणोपमा॥**

१९५.''सब्ब'म्भोज'प्पभासारो, रासिभूतो'व कत्थचि।
तवा'ननं विभाती''ति, होता'**भूतोपमा** अयं॥

१९६.पतीयते'**त्थगम्मा** तु, सद्दसामत्थिया क्वचि।
समास, प्पच्चये, वादि, सद्दयोगं विना अपि॥

१९७.भिङ्गाने'मानि चक्खूनि, ना'म्बुजं मुख'मेवि'दं।
सुब्यत्तसदिसत्तेन, सा **सरूपोपमा** मता॥

१९८.''मये'व मुखसोभा'स्से, त्यल'मिन्दु! विकत्थना।
यतो'म्बुजेपि सा'त्थीति'', **परिकप्पोपमा** अयं॥

१९९.''किं वा'म्बुज'न्तोभन्तालि, किं लोलनयनं मुखं।
मम दोलायते चित्त'', मिच्च'यं **संसयोपमा॥**

२००.किञ्चि वत्थुं पदस्सेत्वा, सधम्मस्सा'भिधानतो।
साम्यप्पतीतिसब्भावा, **पतिवत्थुपमा** यथा॥

२०१.जनेसु जायमानेसु, ने'कोपि जिनसादिसो।
दुतियो ननु नत्थे'व, पारिजातस्स पादपो॥

२०२.वाक्यत्थेने'व वाक्यत्थो, यदि कोचू'पमीयते।
इवयुत्ता, वियुत्तत्ता, सा **वाक्यत्थोपमा द्विधा॥**

इवयुत्ता

२०३.जिनो संक्लेसतत्तानं, आविभूतो जनान'यं।
घम्मसन्तापतत्तानं, घम्मकाले'म्बुदो विय॥

इववियुत्ता

२०४मुनिन्दानन माभाति, विलासेकमनोहरं।
उद्धं समुग्गतस्सा'पि, किं ते चन्द विजम्भना॥

२०५.समुब्बेजेति धीमन्तं, भिन्नलिङ्गादिकं तु यं।
उपमादूसनाया'ल, मेतं कत्थचि तं यथा॥

२०६.हंसी'वा'यं ससी **भिन्न, लिङ्गा,** कासं सरानि'व।
विजाति वचना, हीना, सा'व भत्तो भटो'धिपे॥

२०७.''खज्जोतो भाणुमाली'व, विभाति''त्य**धिकोपमा।**
अफुट्ठत्था ''बलम्बोधि, सागरो विय संखुभि॥''

२०८.''चन्दे कलङ्को भिङ्गो'वे', त्यु'**पमापेक्खिनी** अयं।
खण्डिता केरवा'कारो, सकलङ्को निसाकरो॥

२०९.इच्चेवमादिरूपेसु, भवन्ति विगता'दरा।
करोन्ति चा'दरं धीरा, पयोगे क्वचि दे'व तु॥

२१०.इत्थीयं'वा'जनो याति, वदत्ये'सा पुमा विय।
पियो पाणा इवा'यं मे, विज्जा धन'मिव'च्चिता॥

२११. भवं विय महीपाल, देवराजा विरोचते।
अल'मंसुमतो कच्छं, तेजसा रोहितुं अयं॥

२१२.उपमानो'पमेय्यानं, अभेदस्स निरूपना।
उपमा'व तिरोभूत, भेदा **रूपक** मुच्चते॥

२१३.असेस वत्थु विसयं, एकदेस विवुत्ति [विवत्ति (टीका)], च।
तं **द्विधा** पुन पच्चेकं, समासादिवसा **तिधा॥**

असेसवत्थुविसयसमास

२१४.अङ्गुलिदल संसोभिं, नखदीधिति केसरं।
सिरसा न पिलन्धन्ति, के मुनिन्द पद'म्बुजं॥

असेसवत्थुविसयअसमास

२१५.रतनानि गुणा भूरी, करुणा सीतलं जलं।
गम्भीरत्त मगाधत्तं, पच्चक्खो'यं जिनो'म्बुधि॥

असेसवत्थुविसयमिस्सक

२१६.चन्दिका मन्दहासा ते, मुनिन्द! वदनि'न्दुनो।
पबोधयत्य'यं साधु, मनो कुमुद काननं॥

२१७.**असेसवत्थुविसये,** पभेदो रूपके अयं।
एकदेसविवुत्तिम्हि, भेदो दानि पवुच्चति॥

एकदेसविवुत्तिसमास

२१८.विलास हास कुसुमं, रुचिरा'धर पल्लवं।
सुखं के वा न विन्दन्ति, पस्सन्ता मुनिनो मुखं॥

एकदेसविवुत्तिअसमास

२१९.पादद्वन्दं मुनिन्दस्स, ददातु विजयं तव।
नखरंसी परं कन्ता, यस्स पापजयद्धजा॥

एकदेसविवुत्तिमिस्सक

२२०.सुनिम्मलकपोलस्स, मुनिन्द वदनि'न्दुनो।
साधु'प्पबुद्ध हदयं, जातं केरव काननं॥

२२१.रूपकानि बहून्ये'व [टीकायं उद्धटं युत्तरूपकं सितपुप्फुजलं लोल, नेत्तभिङ्ग तवा'ननं। कस्स नाम मनो धीर, नाकड्ढति मनोहरं।], **युत्ता, युत्तादि**भेदतो।
विसुं न तानि वुत्तानि, एत्थे'व'न्तोगधानि'ति॥

२२२.''चन्दिमा'कासपदुम'', मिच्चेतं **खण्डरूपकं।**
दुट्ठ, ''मम्बोरुहवनं, नेत्तानि'च्चा''दि सुन्दरं॥

२२३.परियन्तो विकप्पानं, रूपकस्सो'पमाय च।
नत्थि यं तेन विञ्ञेय्यं, अवुत्त मनुमानतो॥

२२४पुनप्पुन मुच्चारणं [पुनप्पुनुच्चारणं यं (सी॰ क॰)], यमत्थस्स, पदस्स च।
उभयेसञ्च विञ्ञेय्या, सा'य'**मावुत्ति** नामतो॥

अत्थावुत्ति

२२५मनो **हरति** सब्बेसं, **आददाति** दिसा दस।
गण्हाति निम्मलत्तञ्च, यसोरासि जिनस्स'यं॥

पदावुत्ति

२२६.**विभासेन्ति** दिसा सब्बा, मुनिनो देहकन्तियो।
विभा सेन्ति च सब्बापि, चन्दादीनं हता विय॥

उभयावुत्ति

२२७जित्वा **विहरति** क्लेस, रिपुं लोके जिनो अयं।
विहरत्य'रिवग्गो'यं, रासिभूतो'व दुज्जने॥

२२८.एकत्थ वत्तमानम्पि, सब्बवाक्यो'पकारकं।
दीपकं नाम तं चादि, मज्झ, न्तविसयं **तिधा॥**

आदि दीपक

२२९.**अकासि** बुद्धो वेनेय्य, बन्धून ममितो'दयं।

सब्बपापेहि च समं, नेकतित्थियमद्दनं॥

मज्झे दीपक

२३०.दस्सनं मुनिनो साधु, जनानं **जायते**’मतं।
तद’ञ्ञेसं तु जन्तूनं, विसं निच्चो’पतापनं॥

अन्तदीपक

२३१.अच्चन्त कन्त लावण्य, चन्दा’तप मनोहरो।
जिना’ननि’न्दु इन्दु च, कस्स ना’नन्दको **भवे॥**

मालादीपक

२३२.होता’विप्पटिसाराय, सीलं, पामोज्जहेतु सो।
तं पीतिहेतु, सा चा’यं, पस्सद्ध्या’दि पसिद्धिया॥

२३३.इच्चा’दिदीपकत्तेपि, पुब्बं पुब्ब मपेक्खिनी।
वाक्यमाला पवत्ताति, तं **मालादीपकं** मतं॥

२३४अनेने’व’प्पकारेन, सेसान मपि दीपके।
विकप्पानं विधातब्बा, नुगति सुद्धबुद्धिभि॥

२३५विसेस वचनि’च्छायं, निसेधवचनं तु यं।
अक्खेपो नाम सोयञ्च, **तिधा** कालप्पभेदतो॥

२३६.एकाकी’ नेकसेनं तं, मारं स विजयी जिनो।
कथं त मथवा तस्स, पारमीबल मीदिसं॥

अतीतक्खेपो।

२३७किं चित्ते’जासमुग्घातं, अपत्तो’स्मीति खिज्जसे।
पणामो ननु सो ये’व, सकिम्पि सुगते गतो॥

वत्तमानक्खेपो।

२३८.सच्चं न ते गमिस्सन्ति, सिवं सुजनगोचरं।
मिच्छादिट्ठि परिक्कन्त [परिकन्त (क०)], मानसा ये सुदुज्जना॥

अनागतक्खेपो।

२३९.ञेय्यो **अत्थन्तरन्यासो,** यो, ञ्ञवाक्यत्थसाधनो।
सब्बब्यापी विसेसट्ठो, हिविसिट्ठ'स्स भेदतो॥

हि रहित सब्बब्यापी

२४०तेपि लोकहिता सत्ता, सूरियो चन्दिमा अपि।
अत्थं पस्स गमिस्सन्ति, नियमो केन लङ्घ्यते॥

हि सहित सब्बब्यापी

२४१.सत्था देवमनुस्सानं, वसी सोपि मुनिस्सरो।
गतो'व निब्बुतिं सब्बे, सङ्खारा न **हि** सस्सता॥

हि रहित विसेसट्ठ

२४२जिनो संसारकन्तारा, जनं पापेति [पापेसि (क०)] निब्बुतिं।
ननु युत्ता गति सा'यं, वेसारज्ज समङ्गिनं॥

हि सहित विसेसट्ठ

२४३सुरत्तं ते'धरफुटं, जिन! रञ्जेति मानसं।
सयं रागपरीता हि, परे रञ्जेन्ति सङ्गते॥

२४४वाच्चे गम्मे थ वत्थूनं, सदिसत्ते पभेदनं।
ब्यतिरेको'य'मप्ये'को, भयभेदा **चतुब्बिधो॥**

वाच्चएकब्यतिरेक

२४५.गम्भीरत्त महत्तादि, गुणा जलधिना जिन!।
तुल्यो त्व मसि भेदो तु, सरीरेने'दिसेन ते॥

वाच्च उभयब्यतिरेक

२४६महासत्ता'तिगम्भीरा, सागरो सुगतोपि च।
सागरो'ञ्जनसङ्कासो, जिनो चामीकरज्जुति॥

गम्म एकब्यतिरेक

२४७न सन्तापापहं नेवि, च्छितदं मिगलोचनं।
मुनिन्द! नयनद्वन्दं, तव तग्गुण भूसितं॥

गम्मउभयब्यतिरेक

२४८मुनिन्दानन मम्भोज, मेसं नानत्त मीदिसं।
सुवुत्ता'मतसन्दायी, वदनं ने'दिस'म्बुजं॥

२४९पसिद्धं कारणं यत्थ, निवत्तेत्वा' ञाकारणं।
साभाविकत्त मथवा, विभाब्यं सा **विभावना**॥

कारणन्तरविभावना

२५०अनञ्जिता'सितं नेत्तं, अधरो रञ्जिता'रुणो।
समानता भमु चा'यं, जिना'नावञ्चिता तव॥

साभाविक विभावना

२५१न होति खलु दुज्जन्य, मपि दुज्जनसङ्गमे।
सभावनिम्मलतरे, साधुजन्तून चेतसि॥

२५२जनको, ञापको चेति, दुविधा **हेतवो** सियुं।
पटिसङ्खरणं तेसं, अलङ्कारतायो'दितं॥

२५३भावा'भाव किच्चवसा, चित्तहेतुवसापि च।
भेदा'नन्ता इदं तेसं, मुखमत्त निदस्सनं॥

२५४परमत्थपकासे'क, रसा सब्बमनोहरा।
मुनिनो देसना'यं मे, कामं तोसेति मानसं॥

भावकिच्चो कारकहेतु।

२५५धीरेहि सह संवासा, सद्धम्मस्सा'भियोगतो।
निग्गहेनि'न्द्रियानञ्च, दुक्खस्सु'पसमो सिया॥

अभावकिच्चो कारकहेतु।

२५६मुनिन्द'चन्द संवादि, कन्तभावो'पसोभिना।
मुखेने'व सुबोधं ते, मनं पापा'भिनिस्सटं॥

भावकिच्चो ञापकहेतु।

२५७साधुहत्था'रविन्दानि, सङ्कोचयति ते कथं।
मुनिन्द! चरणद्वन्द, रागबाला'तपो फुसं?

अयुत्तकारी चित्तहेतु।

२५८सङ्कोचयन्ति जन्तूनं, पाणिपङ्केरुहानि'ह।
मुनिन्द! चरणद्वन्द, नख चन्दान' मंसवो॥

युत्तकारी चित्तहेतु।

२५९.उद्दिट्ठानं पदत्थानं, अनुद्देसो यथाक्कमं।
'सङ्ख्यान'मिति निद्दिट्ठं, **यथासङ्ख्यं कमो**पि च॥

२६०.आलाप हास लीळाहि, मुनिन्द! विजया तव।
कोकिला कुमुदानि चो, पसेवन्ते वनं जलं॥

२६१.सिया **पियतरं** नाम, अत्थरूपस्स कस्सचि।
पियस्सा'तिसयेने'तं, यं होति पटिपादनं॥

२६२.पीतिया मे समुप्पन्ना, सन्त! सन्दस्सना तव।
कालेना'यं भवे पीति, तवे'व पुन दस्सना॥

२६३.वण्णितेनो'पमानेन, वुत्या'धिप्पेत वत्थुनो।
समासवुत्ति नामा'यं, अत्थ सङ्खेप रूपतो॥

२६४सा'यं विसेस्यमत्तेन, **भिन्ना'भिन्नविसेसना।**
अत्थे'व अपरा प्य'त्थि, **भिन्ना'भिन्नविसेसना॥**

अभिन्नविसेसन

२६५विसुद्धा'मतसन्दायी, पसत्थरतना'लयो।
गम्भीरो चा'य' मम्बोधि, पुञ्ञेना'पादितो मया॥

भिन्नाभिन्नविसेसन

२६६.इच्छित'त्थपदो सारो, फलपुप्फो'पसोभितो।
सच्छायो'य'मपुब्बोव कप्परुक्खो समुट्ठितो॥

२६७सागरत्तेन सद्धम्मो, रुक्खत्तेनो'दितो जिनो।
सब्बे साधारणा धम्मा, पुब्बत्रा'ञ्ञत्र तु'त्तयं॥

२६८.वत्थुनो'ञ्ञप्पकारेन, ठिता वुत्ति तद'ञ्ञथा।
परिकप्पीयते यत्थ, सा होति **परिकप्पना॥**

२६९.उपमा'ब्भन्तरत्तेन, किरियादिवसेन च।
कमेनो'दाहरिस्सामि, विविधा परिकप्पना॥

उपमाब्भन्तरपरिकप्पना

२७०इच्छाभङ्गा'तुरा'सीना, ता'तिनिच्चल मच्छरा।
वसं नेन्ति'व धीरं तं, तदा योगा'भियोगतो॥

क्रियापरिकप्पना

२७१.गजं मारो समारुळ्हो, युद्धाय'च्चन्त'मुन्नतं।
मग्ग मन्वेसती नून, जिनभीतो पलायितुं॥

गुणपरिकप्पना

२७२मुनिन्द! पादद्वन्दे ते, चारु राजिव सुन्दरे।
मञ्ञे पापा'भि'सम्मद्द, जातसोणेन सोणिमा॥

२७३मञ्ञे, सङ्के, धुवं, नून, मिव, मिच्चेव मादिहि।
सा'यं ब्यञ्जीयते क्वा'पि, क्वा'पि वाक्येन गम्यते॥

गम्मपरिकप्पना

२७४दया सञ्जात सरसा, देहा निक्खन्तकन्तियो।
पीणेन्ता जिन! ते साधु, जनं सरसतं नयुं॥

२७५आरब्भन्तस्स यंकिञ्चि, कत्तुं पुञ्ञवसा पुन।
साधन'न्तरलाभो यो, तं वदन्ति **समाहितं॥**

२७६मारा'रिभङ्गा'भिमुख, मानसो तस्स सत्थुनो।
महामही महारवं, रवी'य'मुपकारिका॥

२७७अवत्वा'भिमतं तस्स, सिद्धिया दस्सन'ञ्ञथा।

वदन्ति तं '**परियाय, वुत्ती**'ति सुचिबुद्धयो॥

२७८विवट'ङ्गणनिक्खित्तं, धन'मारक्ख वज्जितं।
धनकाम! यथाकामं, तुवं गच्छ यदिच्छसि॥

२७९थुतिं करोति निन्दन्तो, विय तं **ब्याजवण्णनं।**
दोसा'भासा गुणा एव, यन्ति सन्निधि मत्र हि॥

२८०.सञ्चालेतु मलं त्वं'सि, भुसं कुवलया'खिलं।
विसेसं तावता नाथ!, गुणानं ते वदाम किं?

२८१.विसेसि'च्छायं दब्बस्स, क्रिया, जाति, गुणस्स च।
वेकल्लदस्सनं यत्र, **विसेसो** नाम यं भवे॥

२८२.न रथा, न च मातङ्गा, न हया, न पदातयो।
जितो मारारि मुनिना, सम्भारावज्जनेन हि॥

दब्बविसेसवुत्ति।

२८३.न बद्धा भूकुटि, नेव, फुरितो दसनच्छदो।
मारारिभङ्गं चा'कासि, मुनि वीरो वरो सयं॥

क्रियाविसेसवुत्ति।

२८४न दिसासु ब्यात्ता [तता (क०)] रंसि,
ना'लोको लोकपत्थटो।
तथाप्य'न्धतमहरं, परं साधुसुभासितं॥

जातिविसेसवुत्ति।

२८५न खरं, न हि वा थद्धं, मुनिन्द! वचनं तव।
तथापि गाळ्हं खणति, निम्मूलं जनतामदं॥

गुणविसेसवुत्ति

२८६.दस्सीयते'तिरित्तं तु, सूरवीरत्तनं यहिं।
वदन्ति विञ्ञूवचनं, **रुळ्हाहङ्कार** मीदिसं॥

२८७दमे नन्दोपनन्दस्स, किं मे ब्यापारदस्सना?

पुत्ता मे पादसम्भत्ता, सज्जा सन्ते’व तादिसे॥

२८८.**सिलेसो** वचना’नेका, भिधेय्ये’कपदायुतं।
अभिन्नपदवाक्यादि, वसा **तेधा’**य मीरितो॥

२८९.अन्धतमहरो हारी, समारुळ्हो महोदयं।
राजते रंसिमाली’यं, भगवा बोधयं जने॥

अभिन्नपदवाक्यसिलेसो।

२९०.सारदा’मलका’भासो, समानीत परिक्खयो।
कुमुदा’करसम्बोधो, पीणेति जनतं सुधी॥

भिन्नपदवाक्यसिलेसो।

२९१.समाहित’त्तविनयो, अहीन मद मद्दनो।
सुगतो विसदं पातु, पाणिनं सो विनायको॥

भिन्नाभिन्नपदवाक्यसिलेसो।

२९२.विरुद्धा, विरुद्धा, भिन्न, कम्मा, नियमवा, परो।
नियम’क्खेपवचनो, अविरोधि, विरोध्य’पि॥

२९३.ओचित्य सम्पोसकादि, सिलेसो, पदजा’दि [पदजाति (क०)] पि।
एसं निदस्सनेस्वे’व, रूप मावि भविस्सति॥

विरुद्धकम्मसिलेस

२९४.सवसे वत्तयं लोकं, अखिलं कल्लविग्गहो।
पराभवति मारारि, धम्मराजा विजम्भते॥

अविरुद्धकम्मसिलेस

२९५.सभावमधुरं पुञ्ञ विसेसो’दय सम्भवं।
सुणन्ति वाचं मुनिनो, जना पस्सन्ति चा’मतं॥

अभिन्नकम्मसिलेस

२९६.अन्धकारा’पहाराय, सभाव मधुराय च।

मनो पीणेति जन्तूनं, जिनो वाचाय भाय च॥

नियमवन्तसिलेस

२९७क्केस'क्खीनं'व कण्हत्तं, भमूनंयेव वङ्कता।
पाणिपादा'धरानं'व, मुनिन्दस्सा'भिरत्तता॥

नियमक्खेपसिलेस

२९८.पाणिपादा'धरेस्वे'व, सारागो तव दिस्सति।
दिस्सते सो'य मथवा, नाथ! साधुगुणेस्व'पि॥

अविरोधिसिलेस

२९९.सलक्खणो'तिसुभगो, तेजस्सी नियतो'दयो।
लोकेसो जितसंक्लेसो,
विभाति समणिस्सरो॥

विरोधिसिलेस

३००.असमोपि समो लोके,
लोकेसोपि नरुत्तमो।
सदयो प्य'दयो पापे, चित्ता'यं मुनिनो गति॥

ओचित्यसम्पोसकपदसिलेस

३०१.संसारदुक्खो'पहता, वनता जनता त्वयि।
सुख मिच्छित मच्चन्तं, अमतन्दद! विन्दति॥

३०२.गुणयुत्तेहि वत्थूहि, समं कत्वान कस्सचि।
संकित्तनं भवति यं, सा मता **तुल्ययोगिता॥**

३०३.सम्पत्तसम्मदो लोको, सम्पत्ता'लोकसम्पदो।
उभोहि रंसिमाली च, भगवा च तमोनुदो॥

३०४अत्थन्तरं साधयता, किञ्चि तं सदिसं फलं।
दस्सीयते असन्तं वा, सन्तं वा तं **निदस्सनं॥**

असन्तफलनिदस्सन

३०५उदया समणिन्दस्स, यन्ति पापा पराभवं।
धम्मराजविरुद्धानं, सूचयन्ता दुर’न्ततं॥

सन्तफलनिदस्सन

३०६.सिरो निक्खित्त चरणो, च्छरियान’म्बुजान’यं।
परम’ब्भुततं लोके, विञ्ञापेत’त्तनो जिनो॥

३०७विभूतिया महन्तत्तं, अधिप्पायस्स वा सिया।
परमुक्कंसतं यातं, तं **महन्तत्त** मीरितं॥

विभूतिमहन्तत्त

३०८.किरीट रतन’च्छाया, नुविद्धा’तप वारणो।
पुरा परं सिरिं विन्दि, बोधिसत्तो’ भिनिक्खमा॥

अधिप्पायमहन्तत्त

३०९.सत्तो सम्बोधियं बोधि, सत्तो सत्तहिताय सो।
हित्वा स्नेहरसाबन्ध, मपि राहुलमातरं॥

३१०.गोपेत्वा वण्णनीयं यं, किञ्चि दस्सीयते परं।
असमं वा समं तस्स, यदि सा **वञ्चना** मता॥

असमवञ्चना

३११. पुरतो न सहस्सेसु, न पञ्चेसु च तादिनो।
मारो परेसु तस्से’सं, सहस्सं दसवड्ढितं॥

समवञ्चना

३१२.विवाद मनुयुञ्जन्तो, मुनिन्दवदनि’न्दुना।
सम्पुण्णो चन्दिमा ना’यं, छत्त मेतं मनोभुनो॥

३१३.परानुवत्तनादीहि, निब्बिन्देनि’ह या कता।
थुति र’प्पकते सा’यं, सिया **अप्पकतत्थुति॥**

३१४.सुखं जीवन्ति हरिणा, वनेस्व’परसेविनो।
अनायासो पलाभेहि, जलदब्भङ्कुरादिभि॥

३१५.उत्तरं उत्तरं यत्थ, पुब्बपुब्बविसेसनं।
सिया **एकावलि** सा'यं, द्विधा विधि, निसेधतो॥

विधिएकावलि

३१६.पादा नखालि रुचिरा, नखालि रंसि भासुरा।
रंसीतमोपहाने'क, रसा सोभन्ति सत्थुनो॥

निसेधएकावलि

३१७.असन्तुट्ठो यति नेव,
सन्तोसो ना'लयाहतो।
ना'लयो यो स जन्तूनं, ना'नन्त ब्यसना वहो॥

३१८.यहिं भूसिय भूसत्तं, अञ्ञमञ्ञं तु वत्थुनं।
विना'व सदिसत्तं तं, **अञ्ञमञ्ञविभूसनं॥**

**३१९.ब्यामं'सु मण्डलं तेन, मुनिना लोकबन्धुना।
महन्तिं विन्दती कन्तिं, सोपि तेनेव तादिसिं॥**

३२०.कथनं सहभावस्स, क्रियाय च, गुणस्स च।
'**सहवुत्ती**'ति विञ्ञेय्यं, त'दुदाहरणं यथा॥

क्रियासहवुत्ति

३२१.जलन्ति चन्दरंसीहि, समं सत्थु नखं सवो।
विजम्भति च चन्देन, समं तम्मुखचन्दिमा॥

गुणसहवुत्ति

३२२.जिनो'दयेन मलीनं, सह दुज्जन चेतसा।
पापं दिसा सुविमला, सह सज्जन चेतसा॥

३२३.विरोधीनं पद'त्थानं, यत्थ संसग्गदस्सनं।
समुक्कंसा'भिधानत्थं, मता सा'यं **विरोधिता॥**

**३२४गुणा सभाव मधुरा, अपि लोके'क बन्धुनो।
सेविता पाप सेवीनं, सम्पदूसेन्ति मानसं॥**

३२५.यस्स कस्स चि दानेन, यस्स कस्स चि वत्थुनो।
विसिट्ठस्स य मादानं, **'परिवुत्ती'**ति सा मता॥

३२६.पुरा परेसं दत्वान, मनुञ्ञं नयनादिकं।
मुनिना समनुप्पत्ता, दानि सब्बञ्ञुतासिरी [मुनिन्द! समनुप्पत्तो, दानि सब्बञ्ञुतासिरिं (क०)]॥

३२७.किञ्चि दिस्वान विञ्ञाता, पटिपज्जति तंसमं।
संसया'पगतं वत्थुं, यत्थ सो'यं **भमो** मतो॥

३२८.समं दिसासु'ज्जलासु, जिन पाद नखं'सुना।
पस्सन्ता अभिनन्दन्ति, चन्दा'तप मना जना॥

३२९.पवुच्चते यं नामादि, कवीनं भावबोधनं।
येन केनचि वण्णेन, **भावो** नामा'य मीरितो॥

३३०.ननु तेयें'व सन्तानो, सागरा न कुलाचला।
मनम्पि मरियादं ये, संवट्टेपि जहन्ति नो॥

३३१.अङ्गङ्गि भावा सदिस, बलभावा च बन्धने।
संसग्गो'लङ्कतीनं यो, तं **'मिस्स'**न्ति पवुच्चति॥

अङ्गङ्गीभावमिस्स

३३२.पसत्था मुनिनो पाद, नख रंसि महानदी।
अहो! गाळ्हं निमुग्गोपि, सुखयत्ये'व ते जने॥

सदिस बल भाव मिस्स

३३३.वेसो सभाव मधुरो, रूपं नेत्त रसायनं।
मधू'व मुनिनो वाचा, न सम्पीणेति कं जनं॥

३३४**आसी** नाम सिया'त्थस्स, इट्ठस्सा'सीसनं यथा।
तिलोके'कगति नाथो,
पातु लोक मपायतो॥

३३५.रस'प्पतीति जनकं, जायते यं विभूसनं।
'रसवन्त'न्ति तं ञेय्यं, रसवन्त विधानतो॥

३३६.रागा'नत'ब्भुत सरोज मुखं धराय,

पादा तिलोकगरुनो'धिक बन्धरागा।
आदाय निच्चसरसेन करेन गाळ्हं,
सञ्चुम्बयन्ति सतता'हित सम्भमेन॥

३३७इच्चा'नुगम्म पुरिमाचरिया'नुभावं,
सङ्खेपतो निगदितो'य मलङ्कतीनं।
भेदो'परूपरि कवीहि विकप्पियानं,
को नाम पस्सितु मलं खलु तास मन्तं॥

इति सङ्घरक्खितमहासामि विरचिते सुबोधालङ्कारे

अत्थालङ्कारावबोधो नाम

चतुत्थो परिच्छेदो।

५. भावावबोध-पञ्चमपरिच्छेद

३३८.पटिभानवता लोक, वोहार'मनुसारिना।
ततो'चित्य समुल्लास, वेदिना कविना परं॥

३३९.ठायिसम्बन्धिनो भाव, विभावा सा'नुभावका।
सम्बज्झन्ति निबन्धा ते, रस'स्सादाय साधुनं॥

भावअधिप्पाय

३४०चित्त वुत्ति विसेसा तु, भावयन्ति रसे यतो।
रत्यादयो ततो भाव, सद्देन परिकित्तिता॥

ठायीभावअधिप्पाय

३४१.विरोधिना'ञ्ञभावेन, यो भावो न तिरोहितो।
सीलेन तिट्ठति'च्चेसो, **'ठायीभावो'**ति सद्दितो॥

ठायीभावप्पभेदउद्देस

३४२रति, हस्सो, च सोको, च,
कोधु, स्साहा, भयं,पि च।
जिगुच्छा, विम्हयो, चेव, समो च नव **ठायिनो॥**

ब्यभिचारीभावअधिप्पाय

३४३तिरोभावा, विभावा'दि, विसेसना'भिमुख्यतो।
ये ते चरन्ति सीलेन, ते होन्ति **ब्यभिचारिनो**॥

ब्यभिचारिभावपभेद

३४४निब्बेदो, तक्क, सङ्का, सम,
धिति, जळता, दीनतु, ग्गा, लसत्तं,
सुत्तं, तासो, गिलानु, स्सुक, हरिस,
सति, स्सा, विसादा, बहित्था [बहिद्धा (क०)]।
चिन्ता, गब्बा, पमारो, मरिस, मद,
मतु, म्माद, मोहा, विबोधो,
निद्दा, वेगा, सबिलं, मरण,
चपलता [सचपला (क०)], ब्याधि, **तेत्तिंस** मेते॥

सत्तिकभावअधिप्पाय

३४५समाहित'त्त'प्पभवं, **सत्तं** [सत्वं (क०)] तेनो'पपादिता।
सत्तिका [सात्विका (क०)] प्य'नुभावत्ते, विसुं **भावा** भवन्ति ते॥

सत्तिकभावप्पभेद

३४६थम्भो, पळय, रोमञ्चा, तथा सेद, स्सु, वेपथु।
वेवण्णियं, विसरता, भावा'ट्ठे'ते तु सत्तिका॥

३४७यदा रत्यादयो भावा, ठितिसीला न होन्ति चे।
तदा सब्बेपि ते भावा, भवन्ति ब्यभिचारिनो॥

३४८**विभावो** कारणं तेसु, प्पत्तियु'द्दीपने तथा।
यो सिया बोधको तेसं,
अनुभावो'य मीरितो॥

३४९नेकहेतुं मनोवुत्ति, विसेसञ्च विभावितुं।
भावं विभावा'नुभावा, वण्णिया बन्धने फुटं॥

३५०सविभावा'नुभावेहि, भावा ते ते यथारहं।
वण्णनीया यथो'चित्यं, लोकरूपा'नुगामिना॥

३५१.चित्त वुत्ति विसेसत्ता, मानसा सत्तिका'ङ्गतो।
बहि निस्सट सेदादि, अनुभावेहि वण्णिया॥

रसअधिप्पाय

३५२.सामाजिकान मानन्दो, यो बन्धत्था'नुसारिनं।
रसीयतीति तञ्ञूहि, **रसो** नामा'य'मीरितो॥

रसप्पभेद

३५३.सविभावा, नुभावेहि, सत्तिक,ब्यभिचारिभि।
अस्सादियत्त मानीय, मानो ठाये'व सो रसो॥

३५४.सिङ्गार,हस्स,करुणा, रुद्द,वीर,भयानका।
बीभच्छ,ब्भुत,सन्ता, च, रसा ठायीन नुक्कमा॥

३५५.दुक्खरूपे'य' मानन्दो, कथं नु करुणादिके?
सिया सोतूनमानन्दो,
सोको वेस्सन्तरस्स हि॥

ठायीभाव निद्देस रतिट्ठायीभाव

३५६.रम्म,देस, कला, काल, वेसादि, पटिसेवना।
युवान'ञ्ञोञ्ञरत्तानं, पमोदो **रति** रुच्चते॥

३५७.युत्या भावानुभावा ते, निबन्धा पोसयन्ति नं।
सोप्य'योग, विप्पयोग, सम्भोगानं वसा **तिधा॥**

हस्सट्ठायीभाव

३५८.विकारा'कतिआदीहि, अत्तनो थ परस्स वा।
हस्सो निद्दा, समा'लस्य, मुच्छादि,ब्यभिचारिभि।
परिपोसे सिया हस्सो, भिय्यो'त्थिपभुतीनं सो॥

हस्सप्पभेद

३५९.सित मिह विकासि नयनं,
किञ्चा'लक्खिय दिजं तु तं **हसितं।**
मधुरस्सरं **विहसितं,** अंससिरोकम्प**मुपहसितं॥**

३६०.**अपहसितं** सजल'क्खि, विक्खित्तङ्गं भवत्य'**तिहसितं।**
द्वे द्वे कथिता चे'सं,
जेट्ठे [मज्झे'धमेति एत्थ मज्झे अधमेति पदच्छेदो] मज्झे'धमे च कमसो॥

करुणट्ठायीभाव

३६१.सोकरूपो तु **करुणो,** निट्ठप्पत्ति'ट्ठ नासतो।
तत्था'**नुभावा** रुदित, पळय,त्थम्भकादयो।
विसादा,लस्य,मरण, चिन्ता'दी **ब्यभिचारिनो॥**

रुद्दट्ठायीभाव

३६२.कोधो मच्छरिया'दीहि, पोसे तास, मदादिभि।
नयना'रुणतादीहि, **रुद्दो** नाम रसो भवे॥

वीरट्ठायीभाव

३६३.पताप, विक्कमा'दीहु, स्साहो '**वीरो**'ति सञ्ञितो।
रण,दान,दयायोगा, वीरो'यं **तिविधो** भवे।
तेवा'**नुभावा** धिति,म, त्या'दयो **ब्यभिचारिनो॥**

भयट्ठायीभाव

३६४.विकारा,सनि,सत्ता'दि, भयु'क्कंसो **भयानको।**
सेदा'दयो **नुभावे**'त्थ, तासा'दी **ब्यभिचारिनो॥**

जिगुच्छाट्ठायीभाव

३६५.जिगुच्छा रुधिरा'दीहि, पूत्या'दीहि विरागतो।
बीभच्छो खोभनु'ब्बेगी, कमेन करुणायुतो।
नासा विकूणनादीहि, सङ्कादीहि'स्स पोसनं॥

विम्हयट्ठायीभाव

३६६.अति लोक पदत्थेहि, विम्हयो'यं रसो'**ब्भुतो।**
तस्सा'**नुभावा** सेद,स्सु, साधुवादा'दयो सियुं।
तासा,वेग,धिति,प्पञ्ञा, होन्ते'त्थ **ब्यभिचारिनो॥**

समट्ठायीभाव

३६७ठायीभावो समो मेत्ता, दया,मोदा'दि सम्भवो।
भावादीहि त'दुक्कंसो, **सन्तो** सन्त निसेवितो॥

इति सङ्घरक्खित महासामिविरचिते सुबोधालङ्कारे

रसभावा'वबोधो नाम

पञ्चमो परिच्छेदो।

सुबोधालङ्कारो समत्तो।